श्रीमतेरामानुजाय नमः
श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः

श्रीजानकीस्तवराज

(श्रीजानकीकृपाकटाक्षस्तोत्रसहितम्)

संकलनकर्ता

आचार्य धीरेन्द्र

(भागवत प्रवक्ता, व्याकरणाचार्य, ज्योतिषाचार्य)

अनन्त श्रीविभूषित श्रीमद्जगद्गुरु

स्वामी श्रीरोहिणीप्रपन्नाचार्य जी महाराज

पुरानी लङ्का आश्रम, चित्रकूट धाम म.प्र.

इस अलौकिक संग्रह को प्राप्त करनें के इच्छुक पाठकगण निम्नलिखित पते या फोन नम्बर पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. **आचार्य श्री धीरेन्द्र जी**
   कान्हादर्शन ज्योतिष केन्द्र
   अखिलभारतीय त्रिपुरसुन्दरी शक्ति समिति (रजि.)
   117 गोविन्द खण्ड विश्वकर्मा नगर दिल्ली - 110095
   फोन नं. 09871662417
   Email : dpkanha@gmail.com
   Web : www.acharyadhirendra.com
   Web : www.tripursundri.org
   Email : info@tripursundri.org
2. **श्रीमोहनराम मन्दिर,** शहडोल (म. प्र.)
3. **श्रीनृसिंह मन्दिर,** पुरानी बस्ती अमरपाटन (म. प्र.)
4. आश्रम भटनवारा सतना (म. प्र.)
5. श्रीहनुमान मन्दिर बाघा (उ. प्र.)
6. **पुरानी लङ्का आश्रम**
   चित्रकूट धाम (म. प्र.)
   फोन नं. 9425342122
7. **आचार्य श्री सुरेन्द्र जी** (दिल्ली)
   फोन नं. 09213629513
8. **शिवेन्द्रमणि पाण्डेय**
   ग्रा. पो. बड़ी हरदी जिला रीवा (म. प्र.)
   फोन नं. 09971770118-09213629513
9. **श्री राजेन्द्र गोस्वामी जी**
   58-ए/1,औद्योगिक क्षेत्र, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-95
   फोन नं. 09810102024

प्रथम संस्करण : फाल्गुन कृष्णपक्ष (महाशिवरात्रि) संवत् २०६६, सन् 2010
कुल प्रतियाँ : 1100
मूल्य : (स श्रद्धया पाठः)

पुरानीलंका आश्रम

स्वामी श्री रोहिणीप्रपन्नाचार्य जी का एक परिचय

जगद्‌गुरु स्वामी श्रीरोहिणीश्वर प्रपन्नाचार्य जी का जन्म जिला रीवा ग्राम: बधरा द्विवेदी ब्राह्मण के घर में हुआ। आश्रम पुरानीलङ्का चित्रकूट के महन्त पद का स्थान ग्रहण कर तरुण तपस्वी होने के कारण निरन्तर आश्रम के कार्य में कटिबद्ध हैं। उत्तरोत्तर आश्रम की सृष्टि तथा शिष्य वर्गों को यात्रा से लाभ हो रहा है, विद्वान्, प्रभावशाली, तपस्वी आदि गुणों को देख कर जगदाचार्य समुदाय जगद्‌गुरु पद्‌वी से अलंकृत किया है। श्रीस्वामी जी के शिष्यों तथा दान दाताओं के द्वारा आश्रम निर्माण कार्य में आय के श्रोत की वृद्धि कर रहे हैं।

वर्तमान श्री स्वामी जी का धर्मयुक्त कार्य, सरलता, अमानी आदि अनेक गुण अनुकरणीय हैं। श्रीजानकी जी तथा पूर्वाचार्यों के सेवा में कटिबद्ध हैं। श्रीस्वामी जी की विशेष कृपा गरीबों व दीन-दुखियों पर होती है। सरल व दयावान् स्वभाव के कारण शिष्यों को श्रीस्वामी जी का सान्निध्य प्राप्त होता रहता है। दया, समता, सहनशीलता की श्रीस्वामीजी एक विशालप्रतिमा हैं,

श्रीस्वामी जी की प्रतिभा व प्रभाव अतुलनीय है। श्रीस्वामी जी निरन्तर ही धर्म के उत्त्थान में लगे रहते है। फलत: अनेकानेक ग्रामों में नगारों में अपनी मधुर वाणी से भक्तों को ओत प्रोत एवं अपनी विलक्षण वाग्धारा से धर्म के प्रति जागरुक बनाते हैं। जिनके दर्शनमात्र से सारे सन्ताप मिट जाते हैं, और अगाध शान्ति एवं पूर्णरूप से भगवत् कृपा प्राप्त होती है।

आचार्य धीरेन्द्र

आचार्यश्री का एक परिचय

आचार्य या गुरु श्रोत्रीय हो व ब्रह्मनिष्ठ भी यह शास्त्र आज्ञा है।

वैदिक संस्कृत परम्परा की विलक्षण वाक् धारा की उत्ताल उर्मि के रसमय एवं भावमय वाहक श्रद्धेय आचार्य श्री धीरेन्द्र जी का जन्म रीवा जिले के निकट ग्राम बड़ी हर्दी (म. प्र.) में 02.10.1979 को हुआ। आपके पूज्य पिता वैकुण्ठवासी पं. श्रीरविशंकर जी पाण्डेय एवं माता श्रीमती कुन्ती देवी पाण्डेय एक निष्ठावान् भगवत् प्रेमी हैं।

आपने प्रारम्भिक शिक्षा अपने ही जन्म स्थान में ग्रहण की। 1993 में आपनें महर्षि वेद विज्ञान विश्व विद्या पीठ जबलपुर (म.प्र.) में प्रवेश लेकर शुक्लयजुर्वेद, कर्मकाण्ड एवं ज्योतिषशास्त्र का गहन अध्ययन किया, और 1998 से आपने श्रीधाम-वृन्दावन में स्थाई रूप से निवास कर सात वर्षों तक श्रीमद्‌भागवत् महापुराण का भावमय अध्ययन कर आपनें उपनिषदों, श्रीरामचरितमानस, श्रीमद्देवीभागवत्, श्रीबाल्मीकिरामायण के साथ-साथ अन्य पुराणों में एवं संगीत में भी प्रवेश लिया। आचार्य श्री ने आचार्य की परीक्षा सम्पूर्णानन्द विश्व विद्यालय से उत्तीर्ण की, आपके पिता आपको योग्य एवं निपुण वक्ता एवं धर्म प्रचारक के रूप में देखना चाहते थे। अत: आपने अथक परिश्रम करके, एवं जगदम्बा की कृपा से व श्रीराधाकृष्ण की महती अनुकम्पा से अट्ठारह वर्ष की आयु से ही श्रीमद्भागवत् का भावमय एवं रसमय प्रवचन एवं अध्ययन साथ-साथ करते आ रहे हैं। आपकी लेखन कार्य में रुचि प्रारम्भ काल से रही है, आपने बाल्यावस्था में ही सम्पूर्ण भारत के अनेक तीर्थों की यात्रा एवं साधना की।

आपने 08.02.2002 में 'अखिल भारतीय त्रिपुरसुन्दरी शक्ति समिति' की स्थापना की। इस समिति के माध्यम से समस्त प्राणियों को आध्यात्म

ज्ञान और संस्कृति परम्परा स्थाई रूप से चलती रहे, एवं जन-जन में भगवत् प्रचार-प्रसार की वृद्धि हो। यह संकल्प लिया आपकी मान्यता है कि मानव सेवा माधव तक पहुँचाती है। इस संकल्प से ऐसा विश्वास है कि हमारी ऋषि परम्परा, एवं संस्कृति का उत्थान होगा। आपकी शास्त्र सम्मत मान्यता है कि भागवत् एवं सभी सनातन ग्रन्थ भगवत् स्वरूप हैं सभी मनुष्यों को समस्त ग्रन्थों का पठन-पाठन कर ऋषि परम्परा का निर्वाह करना चाहिये। इसी धारणा से आचार्य श्री ने श्रीगुरुदेव 'अनन्त् श्रीविभूषित श्रीमद् जगद्गुरु स्वामी श्रीरोहणीश्वर प्रपन्नाचार्य जी महाराज' की आज्ञानुसार "श्रीजानकी स्तवराज" का लेखन कार्य एवं प्रकाशन की जिम्मेदारी लेकर प्रथम श्रीजानकी मैया के चरणों में एवं श्रीगुरुदेव के चरणों मे पश्चात् समस्त भक्त समाज को समर्पित कर रहे हैं। आप साथ में गरीब ब्राह्मण बालकों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करते आ रहे हैं। आपके ऊपर आदि शक्ति जगत् माता श्री त्रिपुरसुन्दरी का आशीर्वाद प्रारम्भ से ही प्राप्त रहा है, यही कारण है कि गुरुदेव भगवान् की कृपा से इतनी कम अवस्था में अनुपम उपलब्धियाँ प्राप्त हुईं। हमारी सभी भक्तों की ओर से एवं अपनी ओर से प्रभु परमेश्वर से प्रर्थना करते हैं की आपको ऐसी शक्ति प्रदान करे एवं शतायु प्रदान करें, ताकि समय-समय पर भक्तों को लाभ मिलता रहे।

पं. लवकुश शास्त्री (म.प्र)

समर्पण

परम प्रिय भगवत् प्रेमी एवं वैष्णवजन!

इस संसार सागर को अपनी विलक्षण कृपा विलासिता से चमत्कृत करने वाले एकमात्र आधार शेषशायी भगवान् श्रीलक्ष्मी-नारायण की परम दिव्य कृपा से तथा महती अनुकम्पा से गुरुदेव आचार्य श्रीधीरेन्द्र जी महाराज जी का अद्वितीय सङ्कलन 'श्रीजानकी स्तवराज' का विशुद्ध संस्करण प्रभु श्रीलक्ष्मीनारायण जी के श्री चरण कमलों में प्रत्यर्पित कर अतीव हर्षातिरेक वशात् परमानन्द का अनुभव कर रहा हूँ।

परम प्रेमी धर्म-बन्धुओं भगवत् सेवी कार्य प्रारब्ध प्रबल हो तब प्राप्त होता है या तो हम वर्तमान में बहुत अच्छे कार्य कर रहे हों, या तो फिर हमारे माता-पिता ने बहुत ही दिव्य कर्म किए हों तब मिलता है। दूसरी स्थिति यह बनती है कि हमारे ऊपर गुरुजनों की कृपा हो, मेरे अनुभव से तो भगवत् सेवी कार्य या मानव सेवी कार्य उपर्युक्त चमत्कृत वस्तुएँ हों तभी मिल सकती हैं। अन्यथा हम मात्र अपनी शक्ति के अनुसार एक पैर भी आगे नहीं बढ़ा सकते।

वास्तव में नर सेवा नारायण तक पहुँचा देती है, शास्त्रानुसार व्यक्ति को शुभकर्मों में लगे रहकर जीवमात्र की सेवा करते रहनी चाहिये। वास्तविकता भी यही है, जीवन का सार भी इसी में है।

मैं अपने आपको धन्य समझता हूँ कि भगवती माँ जानकी जी की सेवा के साथ-साथ जन मानस की भी सेवा मुझे प्राप्त हो रही है। साथ ही जगद्गुरु १००८ स्वामि श्रीरोहिणीश्वर प्रपन्नाचार्य जी का भी शुभाशीष प्राप्त हो रहा है।

प्रभु हम पर दया कर रहे हैं, तो हम भी उनकी याद क्यों न करें? नाम के सहारे याद करते रहें तो "याद आयेगी उनको कभी न कभी" निश्चित रूप से एक बार भी प्रभु की कृपा की दृष्टि हम पड़ जाय तो हमारा जीवन तो वैसे ही धन्य हो जायेगा। लेकिन प्यारे मेरे धर्म–बन्धुओं कुछ भी वस्तु ग्रहण करने के लिए पात्र की जरूरत पड़ती है। इसी प्रकार आध्यात्म जगत् में कुछ भी प्राप्त करने के लिए पात्रता ग्रहण करना परम् अनिवार्य है।

अन्तिम पङ्क्ति में पुनः श्री लक्ष्मी नारायण जी, भगवती श्रीजानकी जी के, व गुरुजनों के चरण कमलों में प्रणाम व बन्दन करता हूँ।

और निःस्वार्थभाव से अद्वितीय सङ्कलन "श्रीजानकीस्तवराज" प्रथम श्री लक्ष्मीनारायण जी के चरण कमलों में फिर आप सभी धर्म प्रेमी वैष्णव जनों को समर्पित करता हूँ।

ॐ नमो नरायणाय

राजेन्द्र गोस्वामी
9810102024

श्रीगणेशाय नमः

अथमङ्गलाचरणम्

ॐ वक्रतुण्डमहाकाय कोटि सूर्य समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।१।।
ॐ सर्वरूप मयीदेवी सर्वं देवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपं तां नमामि परमेश्वरीम्।।२।।
कदम्बवनचारिणीं मुनिकदम्बकादम्बिनीं
नितम्बजितभूधरां सुरनितम्बिनीसेविताम् ।
नवाम्बुरुहलोचनामभिनवांबुदश्यामलां
त्रिलोचनकुटुम्बिनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये।।३।।
अशेषसंसारविहारहीन–
मादित्यगं पूर्णसुखाभिरामम्।
समस्तसाक्षिं तमसः परस्ता–
न्नारायणं विष्णुमहं भजामि।।४।।
यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्तेति मीमांसकाः
सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः।।५।।
मृत्युञ्जयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे।
अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।७।।
।। इति।।

।। श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः।।

✡ जानकी स्तवराज ✡

तां ध्याये स्तवराजेन प्रोक्तरूपां परात्पराम्।
आह्लादिनीं हरेःकाञ्चिच्छक्तिं सात्वतसेविताम्।।१।।

श्रुतिरुवाच

कीदृशः स्तवराजोऽयं केन प्रोक्तः सुरेश्वर।
कथ्यतां कृपया देव! जानकीरूपबोधकः।।२।।

श्रीसंकर्षण उवाच

ब्रबीमि स्तवराजं ते श्रीशिवेन प्रभाषितम्।
श्रुतं श्रीवक्त्रतो दिव्यं पावनानां च पावनम्।।३।।
चकाराराधनं तस्य मन्त्रराजेन भक्तितः।
कदाचिच्छ्रीशिवोरूपं ज्ञातुमिच्छुर्हरेः परम्।।४।।
दिव्यवर्षशतं वेदविधिना विधिबेदिना।
जजाप परमं जाप्यं रहस्ये स्थितचेतसा।।५।।
प्रसन्नोभूत्तदा देवः श्रीरामः करुणाकरः।
मन्त्राराध्येन रूपेण भजनीयः सतां प्रभुः।।६।।

श्रीराम उवाच

द्रष्टुमिच्छसि यद्रूपं मदीयं भावनास्पदम्।
आह्लादिनीं परां शक्तिं स्तूयाः सात्वतसम्मताम्।।७।।
तदाराध्यस्तदारामस्तदधीनस्तया विना।
तिष्ठामि न क्षणं शम्भो! जीवनं परमं मम।।८।।

इत्युक्त्वा देवदेवेशो वशीकरणमात्मनः।
पश्यतस्तस्य रूपं स्वमन्तर्धानं दधौ प्रभुः।।९।।
श्रुत्वारूपं तदा शंभुः तस्याः श्रीहरिवक्त्रतः।
अचिन्तयत्समाधाय मनः कारणमात्मनः।।१०।।
अस्फुरत्कृपया तस्य रूपं तस्याः परात्परम्।
दुर्निरीक्ष्यं दुराराध्यं सात्वतां हृदयङ्गमम्।।११।।
आश्रयं सर्वलोकानां ध्येयं योगिविदां तथा।
आराध्यं मुनिमुख्यानां सेव्यं संयमिनां सताम्।।१२।।
दृष्ट्वाश्चर्यमयं सर्व रूपं तस्याः सुरेश्वरः
तुष्टावजानकीं भक्त्या मूर्तिमतीं प्रभाविनीम्।।१३।।

स्तुति प्रारम्भः

** चरणारविन्द **

वन्दे विदेहतनया पदपुण्डरीकं,
कैशोरसौरभसमाहृत योगिचित्तम्।
हन्तुं त्रितापमनिशं मुनिहंससेव्यं,
सन्मानसालिपरिपीतपरागपुञ्जम्।।१४।।

** चरणतल **

पादस्य यावकरसेन तलं सुरक्तं,
सौभाग्यभाजनमिदंहि परं जनानाम्।
युक्तीकृतं सुभजतां तव देवि नित्यं,
दत्ताश्रयं सुमनसां मनसानुरागम्।।१५।।

** अंगुली **

पादङ्गुलीनखरुचिस्तव देविरम्या,
योगीन्द्रबृन्दमनसा विशदा विभाव्या।
त्रैताप क्लान्त्युपशमाय शशांककान्ति,
दोंषेण किं समुपयाति तुलां युता सा।।१६।।

** नूँपुर **

मञ्जीरधीरनिनदं कलहंसकाली,
हासाय सा भवति भावयति त्वदीयम्।
किञ्चायरं रसिकमौलिमनो नियन्तुं,
दृष्टं मया परमकौशलमत्र तस्य।।१७।।

** गुल्फ **

सिद्धीशबुद्धिवररञ्जनगूढगुल्फौ
पादारविन्द युगलौ जनतापवर्गौ।
विन्दन्ति ते त्रिभुवनेश्वरि! भावसिद्धिं,
ध्यायन्ति ये निखिल सौभगभानुभाजौ।।१८।।

श्रीचरण

हेमाभिवर्द्धितविभूषणभूषितन्ते,
त्रैलोक्यतेज इव मञ्जुल-पुञ्जभूतम्।
भावामि सुन्दरि पदं सरसीरुहाभं,
भीताभयप्रदमनन्त मनोभिध्येयम्।।१९।।

नितम्ब

चक्राभहारिंसुनितम्बयुगं भवत्यः,
ध्येयं सुधीभिरनिशं रसनाभिषक्तम्।

ध्यानास्पदं रघुपतेर्मनसो मुनीनां,
भावैकगम्यममरेशनताङ्घ्रिपद्मे ।।२०।।

कटि

कौशेय वस्त्र परिणद्धमलंकृतं ते,
कार्तस्वराशनिमणि प्रवरप्रवेकैः ।
रत्नोत्तमै रसनया ग्रहकान्तिमद्भि-
र्भास्वन्ति निर्मिततया स्वधियन्ति मध्यम्।।२१।।

उदर

अश्वत्थ एत्रनिभमम्ब धियोदरन्ते,
भव्यं भवाधितरिकेवलकालनाशे ।
भूयो न भावि जननी जठरे निवास,
स्तेषां मनो धरणिजेऽत्र सुलग्नमासीत्।।२२।।

नाभि

नाभीह्रदं हरिमनः करिणः कृशांशो,
पुष्टिप्रदं प्रचलितं त्रिवलीतरङ्गम्।
राजिसुशैवलनिभं भ्रमिभूतरोम्णां,
शान्त्यै तव त्रितपतामतिभावयामः।।२३।।

वक्षोज

नीलाभकञ्चुकमणीन्द्रसमूहनिष्कै-
र्वक्षोजयुग्ममतितुङ्गमलङ्कृतंते।
हारैर्मनोहरतरैस्तरुणि!क्षितीजे!
सौन्दर्यवारिनिधिवारितरङ्गसङ्गम्।।२४।।

बाहु

बाहूमृणालमदखण्डनपण्डितौ ते,
भीताभयप्रदवदान्यतमौ जनानाम्।
रुक्माङ्गदाङ्कित-बिटङ्कितमुद्रिकौ तौ,
हैरण्यकङ्कणधृतावलयौ भजामः।।२५।।

कण्ठ

कण्ठं कपोत-तरुणीगलकान्तिमोषं,
भूषैरनेकविधभूषित-मम्ब तुभ्यम्।
ध्यायेम मानसविशुद्धिकृते कपालो,
योगीन्द्रभावितपदे शमदे शरण्ये।।२६।।

मुखमण्डल

वक्त्रेन्दुमिन्दुचयखण्डितमण्डितांशु,
खण्डांशपण्डितमनः परिदण्डिताशम्।
सनमानसाब्जमुदितद्युतिदं वरेण्यं,
रामाक्षितारक चकोरमहं भजे ते।।२७।।

मुख

ताम्बूलरागपरिरञ्जितदन्तपंक्ति,
प्रद्योतिताधरमधः कृतबिम्बरागम्।
ईषत्स्मितद्युतिकटाक्षविकाशिताशं,
वक्त्रंपरेशनयनास्पदमाभजे ते।।२८।।

नकबेसर

नासाग्रमौक्तिकफलं फलदं परेशे,
ध्यायन्ति ये च निजजाड्यविनाशहेतो।

त्रैलोक्यनिर्मलपदं सुमुखं त्वदीयं,
स्वेच्छाभिकांक्षिण इदं बहुसो रसज्ञाः।।२९।।

नेत्र

ज्ञानं निरञ्जनमिदं विवदन्ति ये ते,
मुह्यन्ति सूरिनिवहास्तरुणीकटाक्षैः।
नालोकयन्ति नितरां तव देवितावद्,
दीर्घायुषाक्षियुगमञ्जनरञ्जितं ते।।३०।।

भौहें

भ्रूवल्लरीविलसितं जगदाहुरीशे,
व्यासादयो मुनिवरास्तुत एव नित्यम्।
नाशाय तस्य तरुणीतिलके त्वदीया,
पाशीकृता हरिमनोमृगबन्धनाय।।३०।।

भाल

भालं विशालमतिसौभगभाजनं ते,
सिन्दूरविन्दु रुचिरद्युति दीप्तिमन्तम्।
पिण्डीकृतःकिमुतराग इतीव तस्मिन्,
प्रद्योतते जननि जागतजन्मभाजम्।।३२।।

कर्ण

आदर्शवर्तुलकपोलबिलोललोलं,
कर्णावतंस युगलं जनजाड्यनाशम्।
सूर्यादिकान्तिहरमाश्रयमोजसान्ते,
तीव्रं धिया धरणिजे स्वधियन्तिधीराः।।३३।।

कर्णफूल

कालोविभेति जगतामतिभक्षकस्ते,
जैवातृको भवदसीमगुणो यतो सौ।
सर्वातिवल्लभतया भजनीय रूपे,
मन्यामहे हरिरिति श्रुतिभूषसारम्।।३४।।

केश पाश

सीमन्तमम्बतव सुन्दरतातिसीमं,
मुक्ताविभूषितमलं समभागभाजम्।
निःसीमतापदकृते यतयो यतन्ति,
जानीमहे महितवन्दितसीममूर्ते।।३५।।

वेणी

कालाहिभीतिभजतामहिभोगभिन्ना,
पायात्परेश्वरि सतामवती सदानः।
एणीदृशस्तव विशालतरा नुवेणी,
दर्भाग्रभागसदृशी सुदृशां त्रिलोक्याः।।३६।।

साड़ी

साटीसुसूक्ष्मतरातिगतानि नीला,
सौवर्णसूत्र कलिता कृपयावृताते।
भर्तुःस्वरूपमनुभावयतां जनानां,
प्रीत्यै करोषि परदेवि यदापिधानम्।।३७।।

स्वरूपवर्ण वर्णन

पारे गिरा गुणनिधे! श्रुतयो वदन्ति,
रूपं त्वदीयमपरं मनसोप्यगम्यम्।

साक्षा कथं सरसिजाक्षि भवेद्रूते ते,
बुद्धौ कृपामनु कृशोदरि मादृशां तत्।।३८।।
किं चित्रमत्र जननि!प्रभया प्रकाश्यं,
विश्वं वदन्ति मुनयरतव देवि! देवाः।
आताश्रयस्त्रिभुवनैर्गुणतोभिवन्द्य-
स्त्राणादिकर्म विभवं परमस्य यस्याः।।३९।।
वेदास्तवाम्ब! विवदन्ति निजस्वरूपं,
नित्यानुभूतिभवभावपराः परेशैः।
निर्णेतुमद्य यतयस्तपसा यतन्ते,
बोधाय पादसरसीरुहयुग्मभृङ्गाः।।४०।।
जातं त्वदेव नितरां जगतां निदानं,
मन्यामहे तदिदमम्ब! कृतं श्रुतीनाम्।
सर्वंयतःखलु विचेष्टितमाशु शक्तेः,
कार्यं हि कारणगुणानवलम्ब विद्यात्।।४१।।
जानीमहे जननि! ते नयनारविन्द,
स्योन्मीलनेऽजनि जगत् क्षयस्तन्निमीलात्।
वैशम्यपशून्यसमतां समुपागते यत्स्यादस्य,
पालनभसंशयमस्य नूनम्।।४२।।
ज्ञातंत्वदीयमपरं चरितं विशालं,
भावं भवे ननुनिजे प्रकटीकरोषि।
प्रेम्णैव तैः प्रथमतः परमानुभावं,
भाव्यं पदाब्जमनिशं स्वजनैरतस्ते।।४३।।
येषामदः परमवस्तु च तज्जनानां,
प्रद्योतते जनकजाचरणारविन्दम्।

सर्वसमीक्ष्य इह कर्ममनोवचोभि-
र्ब्रह्मस्वरूपमतिदुर्लभतानुसेव्यम्।।४४।।
किं दुर्लभं चरणपङ्कजसेवया ते,
पूर्णारमन्ति रमणी यतया त्रिलोक्याम्।
वस्तुप्रकाशविशदं हृदयेत्वदीयं,
तेषामहो किमुत साधनकोटियत्नैः।।४५।।
धन्यास्त एव तव देवि पदारविन्दं,
स्यन्दायमानमकरन्दमहर्निशं ये।
भृङ्गायमानमनसो नितरां भजन्ते,
भावावबोधनिपुणाः परदेवतायाः।।४६।।
पादाब्जरागपरिरञ्जितचित्तभृङ्गो,
येषां समीक्ष्य इह जातमिदं स्वरूपम्।
तेषां न किं प्रवदते परितो वरिष्ठं,
साध्यं भवेदिह परत्र न किञ्चिदन्यत्।।४७।।
चुम्बन्ति चिद्धनमहोमकरन्दमस्या,
देवैर्मुनीन्द्रनिचयैरति दुर्लभं ते।
पादाब्जयोरतिविकाशविलासबोधः,
स्यादेव देवि तवकान्तनिजस्वरूपे।।४८।।
यावन्न ते सरसिजद्युतिहारिपादे,
नस्याद्रति-स्तरु-नवाङ्कुर-खण्डिताशे,
तावत्कथं तरुणमौलिमणे जनानां,
ज्ञानं दृढं भवति भामिनि रामरूपे।।४९।।
साक्षात्तपोव्रतयमैनियमैः समीहे,
कर्तुकृपामृतमिह प्रसभं स्वरूपम्।

नाथस्यते श्रुतिवचोविषयं कथं स्या-,
न्मूढोवृथोत्सृजति देवि सुखान्यमूनि।।५०।।
योगाधिरूढमुनयो हरिपादपद्मे,
ध्यायन्ति ये चरण पङ्कजयुग्ममन्तः।
वाञ्छति निघ्नशततोप्यनिवार्यमाणां,
भक्तिं भवाब्धितरणाय कृपापयोधे।।५१।।
चार्वङ्किते चरणचारणवन्दिसङ्गं,
मह्यं विदेह तनये परिदेहि नान्यम्।
याचेवरं वरविदां वरदे भवत्या,
येनामुना तव धवे मम रञ्जना स्यात्।।५२।।
याचेऽहमम्ब रघुनन्दनमूर्तिभावं,
सार्द्धं त्वयातिदृढ मञ्जलिनाविशेषम्।
त्वं देहि वेत्तृ वरदे मुनिसङ्घमुख्या-,
मन्यन्तिवल्लभतरां स्वपतेभवन्तीम्।।५३।।

उपसंहार

एवंस्तुत्वा परं रूपं जानक्या जाड्यनाशनम्।
उपारराम शान्तात्मा योगेश्वरः सदाशिवः।।५४।।
निरीक्ष्य तन्मुखाम्भोजं भावयन् रूपमद्भुतम्।
कांक्षं स्तस्याः परां भक्तिं पादपङ्कजयोर्दृढाम्।।५५।।
उवाच तं वरारोहा जानकी भक्तवत्सला।
एवमस्तु महादेव यत्त्वयोक्तं च नान्यथा।।५६।।
अन्यत्ते कांक्षितं ब्रूहि दास्यामि देवदुर्लभम्।
सत्यांमयिकृपोन्मुख्यां न किञ्चित्तस्यदुर्लभम्।।५७।।

प्रसन्नवदनां दृष्ट्वा सोपि देवशिरोमणिः।
ययाचे वरमात्मीयं रहस्यं भावबोधकः।।५८।।
प्रादात्तस्मैवदान्या सा यद्यन्मनसिकाङ्क्षितम्।
वरं-वरेश्वरी साक्षात्पुनरुवाच सा हितम्।।५९।।
अयं पवित्रमौलिर्मे स्तवराजः त्वयाशिव।
प्रकाशितोतिगोप्योपिमत् प्रसादात्सुरोत्तम।।६०।।

फलश्रुति निष्काम

यः पठेदिममग्रे मे पूजाकाले प्रयत्नतः।
तस्येहामुत्र किञ्चन्न वस्तुस्याद्दूगगोचरम्।।६१।।

फलश्रुति सकाम

धनं धान्यं यशः पुत्रानैश्वर्यमतिमानुषम्।
प्राप्येहामोदते भूयो मत्पदं तद्व्रजेत्सह।।६२।।
यद्यल्लोकोत्तरं वस्तु त्रिषुलोकेषु दृश्यते।
तत्सर्वमस्य पाठेन प्राप्नुयाद्भुविमानवः।।६३।।

आज्ञा

इदं मे परमैकान्तं रहस्यं सुर सत्तम।
न प्रकाश्यं त्वयाशम्भो शठाय भावद्वेषिणे।।६४।।
भक्तिर्यस्यातिदेवेशे सर्वैश्वर्ये तथामयि।
गुरौसर्वात्म भावेन विद्यतेभक्तिरुत्तमा।।६५।।
तस्मैदेयं त्वया शम्भो भावनार्द्रहृदे गुरौ।
सर्वभूत हितार्थाय शान्ताय सौम्यमूर्तये।।६६।।
इत्क्त्वा भावनामूर्तिः सीता जनक नन्दिनी।
कृपापात्राय तस्मै सा पुनः प्रादाद्वरान्तरम्।।६७।।

सर्वदुःखप्रशमनं जानक्यास्तु प्रसादतः।।६८।।

।। श्रीजानकी स्तवराज सम्पूर्णम् इति शुभम् ।।

* श्रीकिशोरी जी का चरमशरणागत मन्त्र *

ॐकृपारूपिणिकल्याणि रामप्रिये श्री जानकी।
कारुण्यपूर्णनयने दयादृष्ट्यावलोकये।।

श्री किशोरी जी का व्रत

पापानां वा शुभानां वा वधार्हाणां प्लवङ्गम।
कार्यं कारुण्यमार्येण न कश्चिन्नापराध्यति।।

अथ शरणागति पञ्चकम्

ॐसर्वजीव शरण्ये श्रीसीते वात्सल्य सागरे।
मातृमैथिलि सौलभ्ये रक्ष मां शरणागतम्।।१।।
कोटि कन्दर्प लावण्यां सौन्दर्य्यैक स्वरूपताम्।
सर्वमङ्गल माङ्गल्यां भूमिजां शरणं ब्रजे।।२।।
ॐशरणा गतदीनार्त परित्राणपरायणम्।
सर्वस्यार्ति हरेणैक धृतव्रतां शरणं ब्रजे।।३।।
ॐसीतां विदेह तनयां रामस्य दयितां शुभाम्।
हनुमता समाश्वस्तां भूमिजां शरणं ब्रजे।।४।।
ॐअस्मिन् कलिमला कीर्णे कालेघोर भवार्णवे।
प्रपन्नानां गतिर्नास्ति श्रीमद्राम प्रियां विना।।५।।

।। इति जानकीचरमशरणागत मन्त्र ।।

***

श्रीजनकजा प्रपत्ति सारस्तोत्रम्

न वाग्वपुर्बुद्धिभिरेव कस्यचित्
कदापि हिंसास्तु शरीरिणा वृथा।
भवत्यदाम्बोरुह चिन्तनं विना न
चाप यात्वदम्बुज वीक्षणेक्षणः।।१।।
हसन्तु निन्दन्तु वदन्तु दुर्वचो
जनानियुक्ता हृदयस्थितेन वै।
केनापिदेवेन दयाश्रितं सदा न
संस्थितिं स्वां प्रजहास्तु मे मनः।।२।।
निन्दाभयं मेऽस्तु तथा न जातु
चिद्यथेह निद्रा चरणान्ममोरसि।
परोपकाराय सदास्तु मे मतिर्न
चापकाराय कदापि कस्यचित्।।३।।
माक्रूर दृष्टिर्मम सत्सु भूयान्निरी
क्ष्यमाणोस्य सकोप नेत्रैः।
मा सेवतस्तान विपक्वबुद्ध च
साधून्मदो मे हृदयं वृणोतु।।४।।
अपात्र पूजा न च पात्रहेलनं
तिरस्क्रिया नाप्यपराध्यतां सताम्।
अदण्डच्च दण्डेस्तु न मे कृतघ्नता
मयो क्रिया कापि विदेहनन्दिनी।।५।।
योषित्सु सर्वासु च मातृबुद्धि-
स्तथास्तु मे स्वसृमतिःप्ररूढाः।

बालेषु सर्वेषु च बन्धुबुद्धिर्मा-
नीच बुद्धिः सततं ममास्तु।।६।।
विश्वासघातो न तथा कदर्यता ना
भक्ष्यपेयाशनपानमस्तु मे।
न शास्त्र संवर्जित कर्मसुस्पृहा
कदापिभूयान्महिते महीयसाम्।।७।।
सहिष्णुता क्षान्तिरमन्दशुमुषी-
वात्सल्यताऽव्याज कृपा विनम्रता।
उदारता ह्री मृदुता सुशीलता न
जातु चैता हृदयं त्यजन्तु मे।।८।।
मदाश्रिताः क्लेशयुता न सन्तु वै
विशेषतो भागवता उपेक्षया।
नाऽग्यागताःक्रूरगिरा दृशार्दिता
समुछ्वसन्तु स्मयदूषितात्मनः।।९।।
ऋते त्वदुच्छिष्टमथान्यवस्तुषु-
स्याद्भोग बुद्धिर्न कदापिमामकी।
त्वदर्थमेवाऽखिलचेष्टितं हि मे
भक्तापराधो न कदापि मां स्पृशेत्।।१०।।
रतिः प्रवृत्तौ विरतिर्निवृत्तौ
सङ्गोऽसतां नास्तु सतामसङ्गः।
सर्वेषु सर्वास्वनुरागदृष्टिर्मा
दोषदृष्टिर्मम कर्हिचित्स्यात्।।११।।
स्वभृत्यसंपोषणसक्तचेतसा
नोपेक्षितःसन्तुमया-त्वदाश्रिताः।

लोभाद्भयाद्वा निजधर्मवर्जिता:
क्रियास्तु नो कापि तवानुकम्पया।।१२।।
स्वन्पोषमं मानुषमेत्य जन्म
स्वर्वासिमृग्यं क्षण भङ्गुरं च।
वैरं न कुर्यां तव तुष्टिकाम:
केनाप्यहं श्री निमिवंश भूषे।।१३।।
न्यायालयं ते क्षमता प्रधानं
न्यायप्रधानं न वदन्ति सन्त:।
क्षान्तिरप्रधाना मातरस्तु तस्मा-
यायप्रधाना न मम क्षमाब्धे।।१४।।
भयं न मे स्याच्चरत: स्वधर्मं
कालादपिं प्राप्तविवेक दृष्टे:।
मत्तस्तथा तन्न पिपीलिकानां
सौभाग्यमेतत्कृपया प्रयच्छ।।१५।।
स्वशिक्षये वा दृढयन्स्वधर्मे
समाश्रितान्भागवते प्रधाने।
अनेक सांसारिक भोगशक्तं न
कांक्षितं जन्म चिराय लोके।।१६।।
त्वद्धामवासस्तव कीर्ति गानं
त्वन्नामसंकीर्तन मेव नित्यम्।
अम्बाशुभोत्सङ्ग विहारशीले
स्वरूपसंचिन्तनमस्तु मह्यम्।।१७।।
अन्यान्य देवार्चन वन्दनस्मृतिस्तव-
प्रपत्ति: श्रवणानुरागिता।

स्वप्नेऽपि भूयादिह भक्तिकोटिका
नानन्यता पाठपरायणस्यमे।।१८।।
पूज्यानुवन्द्या परिभावनीया-
ज्ञेयानुज्ञेया समुपासनीया।
श्रेय: परं कांक्षिभिरात्मनिष्ठै-
स्त्वमेवहित्वाखिल कर्म जालम्।।१९।।
स मे पिता सा जननी स बन्धु:
सखा स दाता स पति: गुरु:स:।
कृपालुतोपेक्षित सर्वदोष:
सेवा सहायो य इहास्त्वमीह:।।२०।।
परमलालनै: पाल्यते त्वया
निरयकर्म कृन्मादृशो जन:।
करुणया यया हेतुहीनया कुरु
न मां तया सेवयोज्झितम्।।२१।।
विनय एव मेज्यऽहि साञ्जलि:
सुनयनाकभूषे प्रसीदतम्।
अनुदिनं तवोच्छिष्ट जीवतो
वनरुहाक्षि मो चेत्तु का गति:।।२२।।

।। इति श्रीजनकजा प्रपत्ति सारस्तोत्रम् ।।

***

अष्टाक्षर-श्रीराममन्त्रस्तोत्रम्

श्रीराम:शरणं मम

लक्ष्मीनाथ समारम्भां नाथयामुन मध्यमाम् ।
अस्मदाचार्य पर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ।।१।।

ॐ

विश्वस्य चात्मनोनित्यं पारतन्त्र्यं विचिन्त्य च।
चिन्तयेच्चेतसा नित्यं श्रीराम:शरणं मम।।२।।
अचिन्त्योऽपि शरीरादे: स्वातन्त्र्येनैव विद्यते।
चिन्तयेच्चेतसा नित्यं श्रीराम:शरणं मम।।३।।
आत्माधारं स्वतंत्रं च सर्वशक्तिं विचिन्त्य च।
चिन्तयेच्चेतसा नित्यं श्रीराम:शरणं मम।।४।।
नित्यात्म गुण संयुक्तो नित्यात्मतनुमण्डित:।
नित्यात्मकेलिनिरत: श्रीराम:शरणं मम।।५।।
गुणलीलास्वरूपैश्च मितिर्यस्य न विद्यते।
अतोवाङ्मनसा वेद्य: श्रीराम:शरणं मम।।६।।
कर्ता सर्वस्य जगतो भर्ता सर्वस्य सर्वग:।
आहर्ता कार्य जातस्य श्रीराम:शरणं मम।।७।।
वासुदेवादिमूर्तीनां चतुर्णां कारणं परम्।
चतुर्विंशति मूर्तीनां श्रीराम:शरणं मम।।८।।
नित्यमुक्तजनैर्जुष्टो निविष्ट: परमे पदे।
पदं परमभक्तानां श्रीराम: शरणं मम।।९।।

महदादिस्वरूपेण संस्थित: प्राकृते पदे।
ब्रह्मादिदेवरूपैश्च श्रीराम: शरणं मम।।१०।।
मन्वादिनृपरूपेण श्रुतिमार्गं बिभर्तिय:।
या:प्राकृत स्वरूपेण श्रीराम:शरणं मम।।११।।
ऋषिरूपेण यो देवो वन्यवृत्तिमपालयत्।
योऽन्तरात्मा च सर्वेषां श्रीराम:शरणं मम।।१२।।
योऽसौ सर्वतनु: सर्व: सर्वनामा सनातन:।
आस्थित: सर्वभावेषु श्रीराम:शरणं मम।।१३।।
बहिर्मत्स्यादिरूपेण सद्धर्ममनुपालयन्।
परिपाति जनान्दीनान् श्रीराम:शरणं मम।।१४।।
यश्चात्मानं पृथक्कृत्य भावेन पुरुषोत्तम:।
आर्चायामास्थितो देव: श्रीराम:शरणं मम।।१५।।
अर्चावतार रूपेण दर्शनस्पर्शनादिभि:।
दीनानुद्धरते योऽसौ श्रीराम:शरणं मम।।१६।।
कौशल्या शुक्तिसञ्जातो जानकी कण्ठभूषण:।
मुक्ताफलसमो योऽसौ श्रीराम:शरणं मम।।१७।।
विश्वामित्रमखत्राता ताडकागतिदायक:।
अहल्याशाप शमन: श्रीराम:शरणं मम।।१८।।
पिनाकभञ्जन: श्रीमान् जानकीप्रेमपालक:।
जामदग्न्यप्रतापघ्न: श्रीराम:शरणं मम।।१९।।
राज्याभिषेकसंहृष्ट: कैकेयी वचनात्पुन:।
पित्रादत्तवनक्रीड: श्रीराम:शरणं मम।।२०।।
जटाचीरधरोधन्वी जानकी-लक्ष्मणान्वित:।
चित्रकूटकृतावास: श्रीराम:शरणं मम।।२१।।

महापञ्चवटीलीला सञ्जातपरमोत्सवः।
दण्डकारण्य संचारी श्रीरामःशरणं मम।।२२।।
खरदूषणविच्छेदी दुष्टराक्षस भञ्जनः।
हृतशूर्पनखाशोभः श्रीरामःशरणं मम।।२३।।
मायामृग विभेत्ता च हृतसीतानुतापकृत्।
जानकीविरहाक्रोशी श्रीरामःशरणं मम।।२४।।
लक्ष्मणानुचरोधन्वी लोकयात्राविडम्बकृत्।
पम्पातीर कृतान्वेषः श्रीरामःशरणं मम।।२५।।
जटायुगति दाता च कबन्धगतिदायकः।
हनुमत्कृतसाहित्य श्रीरामःशरणं मम।।२६।।
सुग्रीवराज्यदः श्रीशो बालिनिग्रह कारकः।
अङ्गदाश्वासनकरः श्रीरामःशरणं मम।।२७।।
सीतान्वेषणनिर्मुक्त हनुमत्प्रमुखव्रजः।
मुद्रानिवेशितबलः श्रीरामःशरणं मम।।२८।।
हेलोत्तरितपाथोधि-र्बलनिर्धूतराक्षसः।
लङ्कादाहकरो धीरः श्रीरामःशरणं मम।।२९।।
रोषसम्बद्धपाथोधि - र्लङ्काप्रासादरोधकः।
रावणादिप्रभेत्ता च श्रीरामःशरणं मम।।३०।।
जानकी जीवनत्राता विभीषणसमृद्धिदः।
पुष्पकारोहणासक्तः श्रीरामःशरणं मम।।३१।।
राज्यसिंहासनारूढः कौशल्यानन्दवर्द्धनः।
नामनिर्धूतनिरयः श्रीरामःशरणं मम।।३२।।
यज्ञकर्त्ता यज्ञभोक्ता यज्ञभर्तामहेश्वरः।
अयोध्यामुक्तिदः शास्ता श्रीरामःशरणं मम।।३३।।

प्रपठेद्यः शुभं स्तोत्रं मुच्येत् भवबन्धनात्।
मन्त्रश्चाष्टाक्षरो देवः श्रीरामःशरणं मम।।४।।

।। इति अष्टाक्षर श्रीराममन्त्रस्तोत्रम् ।।

***

अनन्यताऽऽवेदनम्

शृणोमि सीतापति चित्रसत्कथां,
वदामि सीतापति कीर्तिमक्षयाम्।
स्मारामि सीतापति दिव्यविग्रहं,
वृणोमि सीतापति भक्तिमुत्तमाम्।।१।।
ब्रजामि सीतापतिदिव्यमन्दिरं,
तथा च सीतापतिसत्प्रपन्नताम्।
युनज्मि सीतापति चिन्तने मनः,
तनोमि सीतापतिदाससङ्गतिम्।।२।।
अवैमि सीतापतिमञ्जुबन्धुतां,
तथा च सीतापतिदिष्टभोग्यताम्।
ततश्च सीतापति नित्यधामदां,
करोमि सीतापति भक्तिमुत्तमाम्।।३।।
करोमि सीतापतिपाददासतां,
नमामि सीतापति पादपङ्कजम्।
पठामि सीतापतिकाव्यसंहतिं,
जपामि सीतापतिमन्त्रभूषितम्।।४।।
करोमि सीतापतिविग्रहार्चनं,
तथा च सीतापतिमूर्तिदर्शनम्।

गुणाब्धि सीतापति नाम कीर्तनं,
परेश सीतापतिपादवन्दनम्।।५।।
भजामि सीतापतिमेव केवलं,
रटामि सीतापतिमेव केवलम्।
श्रयामि सीतापतिमेव केवलं,
प्रयामि सीतापतिमेवकेवलम्।।६।।

।। इति अनन्यताऽऽवेदनम् ।।

***

श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः

अथ श्रीसीताराम कृपाकटाक्ष स्तोत्रम्

मुनीन्द्र वृन्दवन्दिते त्रिलोकशोक हारिणि,
प्रसन्नवक्त्र पङ्कजे निकुञ्ज भू विलासिनि।
विदेह भूपनन्दिनि नृपेन्द्रसूनु संगते,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।१।।

अशोकवृक्ष वल्लरी वितान मण्डपस्थिते,
प्रवाल जाल पल्लव प्रभारुणान्घ्रि कोमले।
वराभयस्फुरत्करे प्रभूत सम्पदालये,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।२।।
तडित्सुवर्ण चम्पक प्रदीप्त गौरविग्रहे,
मुखप्रभापरास्त कोटि शारदेन्दु मण्डले।
विचित्र चित्र संचरच्चकोर शाव लोचने,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।३।।

अनङ्ग रङ्ग मङ्गल प्रसङ्ग भङ्गुर भ्रुवां,
सु विभ्रमस्तु सम्भ्रमद् दृगन्त वाण पातनैः।
निरन्तरं वशीकृतावधेश भूपनन्दने,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।४।।
मदोन्मदादियौवने प्रमोदमान मण्डिते,
प्रियानुरागरञ्जिते कला विलास पण्डिते।
अनन्य धन्य कुञ्जराजि कामकेलि कोविदे,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।५।।
विशेष हावभाव धीर हीर हार भूषिते,
प्रभूत शात कुम्भ-कुम्भ कुम्भि कुम्भ सुस्तनि।
प्रशस्त मन्दहास्य चूर्ण-पूर्ण सौख्यसागरे,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।६।।
मृडाल वालवल्लरी तरङ्ग रङ्ग दोर्लते,
लताग्र लास्य लोल नील लोचना विलोकने।
ललल्लुलन् मिलन्मनोज मुग्ध मोहमाव्रजे,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।७।।
सुवर्णमालिकांचिते त्रिरेख कम्बु कण्ठके,
त्रिसूत्र मङ्गलीगुणत्रिरत्न दूर दीप्यते।
सलोल नील कुन्तले प्रसून गुच्छ गुम्फिते,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।८।।
नितम्ब विम्ब लम्बमान पुष्पमेखलागुणे,
प्रशस्त रत्न किंकिणी कलाप मध्य मञ्जुले।
करीन्द्र सुण्डदण्डिका वरोह शोभगौरके,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।९।।

अनेक मन्त्रनाद मञ्जु नूपुरारवस्खले,
सुराज राज हंस वंश निःक्वणाति गौरवे।
विलोल हेमवल्लरी विडम्बि चारु चंक्रमे,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।१०।।
अनन्तकोटि विष्णुलोक नभ्रपद्मजार्चिते,
हिमाद्रिजा पुलोमजा विरंचिजा वरप्रदे।
अपार सिद्धि वृद्धि दिग्ध सत्पदाङ्गुलीनखे,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।११।।
मखेश्वरी क्रियेश्वरी स्वधेश्वरी सुरेश्वरी,
त्रिवेद भारतीश्वरी प्रमाणशासनेश्वरी।
रमेश्वरी क्षमेश्वरी प्रमोदकाननेश्वरी,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।१२।।
इतीदमद्भुतस्तवं निशम्य भूमिनन्दिनी,
करोति सन्ततं जनं कृपाकटाक्ष भाजनम्।
भवत्यनेक संचितं त्रिरूप कर्म नाशन्,
लभेत्तथा नरेन्द्रसूनु मन्दिरप्रवेशनम्।।१३।।
राकायां च नवम्यां च दशम्यां च विशुद्धधीः।
एकादश्यां त्रयोदश्यां यः पठेत्साधकःसुधीः।।१४।।
यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति साधकः।
सीताकृपाकटाक्षमात्रेण भक्तिःस्यात्प्रेमलक्षणा।।१५।।
उरुदघ्ने नाभिदघ्ने हृद्घ्ने कण्ठदघ्नके।
सीता कुण्डे जले स्थित्वा यःपठेत्साधकःसतम्।।१६।।
तस्यसर्वार्थ सिद्धिः स्यात् वाक्यसामर्थ्यमेव च।
ऐश्वर्यं च लभेत्साक्षात् दृशापश्यतिजानकीम्।।१७।।

तेन सा तत्क्षणादेव तुष्टा द त्ते महावरम्।
तेन पश्यति नेत्राभ्यां तत्प्रियं श्यामसुन्दरम्।।१८।।
नित्य लीला प्रवेशं च ददाति श्रीरघूत्तमः।
अतः परतरं प्रार्थ्यं वैष्णवानां न विद्यते।।१९।।

।। इति श्रीसीताराम कृपाकटाक्ष स्तोत्रम्।।

श्रीराघवेन्द्राष्टकम्

अच्युतं राघवं जानकी वल्लभं
कोशलाधीश्वरं रामचन्द्रं हरिम्।
नित्यधामाधिपं सद्गुणाम्भोनिधिं
सर्वलोकेश्वरं राघवेन्द्रं भजे।।१।।
सर्वसंकारकं सर्वसंधारकं
सर्वसंहारकं सर्वसन्तारकम्।
सर्वपं सर्वदं सर्वपूज्यं प्रभुं
सर्वलोकेश्वरं राघवेन्द्रं भजे।।२।।
देहिनं शेषिणं गामिनं रामिणं
ह्यस्य सर्वप्रपञ्चस्य चान्तःस्थितम्।
विश्वपारस्थितं विश्वरूपं तथा
सर्वलोकेश्वरं राघवेन्द्रं भजे।।३।।
सिन्धुना संस्तुतं सिन्धुसेतोः करं
रावणघ्नं परं रक्षसामन्तकम्।
पद्मजादिस्तुतं सीतया चान्वितं
सर्वलोकेश्वरं राघवेन्द्रं भजे।।४।।

योगिसिद्धाग्र-गण्यर्षि-सम्पूजितं
पद्मजोन्पादकं वेददं वेदपम्।
वेदवेद्यं च सर्वज्ञहेतुं श्रुतेः
सर्वलोकेश्वरं राघवेन्द्रं भजे।।५।।
दिव्यदेहं तथा दिव्यभूषान्वितं
नित्यमुक्तैकसेव्यं परेशं किलम्।
कारणं कार्यरूपं विशिष्टं विभुं
सर्वलोकेश्वरं राघवेन्द्रं भजे।।६।।
कुञ्चितैः कुन्तलैःशोभमानं परं
दिव्यभव्जेक्षणं पूर्णचन्द्राननम्।
नीलमेघद्युतिं दिव्यपीताम्बरं
सर्वलोकेश्वरं राघवेन्द्रं भजे।।७।।
चापबाणान्वितं भुक्ति-मुक्तिप्रदं
धर्मसंरक्षकं पापविध्वंसकम्।
दीनबन्धुं परेशं दयाम्भोनिधिं
सर्वलोकेश्वरं राघवेन्द्रं भजे।।८।।

।। इति श्रीराघवेन्द्राष्टकम्।।

***

श्रीभरताग्रजाष्टकम्

हे जानकीश वरसायकचापधारिन्
हे विश्वनाथ रघुनायक देव-देव।
हे राजराज जनपालक धर्मपाल
त्रायस्व नाथ भरताग्रज दीनबन्धो।।१।।
हे सर्ववित् सकलशक्तिनिधे दयाब्धे
हे सर्वजित् परशुरामनुत प्रवीर।
हे पूर्णचन्द्रविमलाननं वारिजाक्ष
त्रायस्व नाथ भरताग्रज दीनबन्धो।।२।।
हे राम बद्धवरुणालय हे खरारे
हे रावणान्तक विभीषणकल्पवृक्ष।
हे पद्मजेन्द्र शिववन्दितपादपद्म
त्रायस्व नाथ भरताग्रज दीनबन्धो।।३।।
हे दोषशून्य सुगुणार्णवदिव्यदेहिन्
हेसर्वकृत् सकलहृच्चिदचिद्विशिष्ट।
हे सर्वलोकपरिपालक सर्वमूल
त्रायस्व नाथ भरताग्रज दीनबन्धो।।४।।
हे सर्वसेव्य सकलाश्रय शीलबन्धो
हे मुक्तिद प्रपदनाद् भजनात्तथा च।
हे पापहृत् पतितपावन राघवेन्द्र
त्रायस्व नाथ भरताग्रज दीनबन्धो।।५।।
हे भक्तवत्सल सुखप्रद शान्तमूर्ते
हे सर्वकर्मफलदायक सर्वपूज्य।

हे न्यून कर्मपरिपूरक वेदवेद्य
त्रायस्व नाथ भरताग्रज दीनबन्धो।।६।।
हे जानकी रमण हे सकलान्तरात्मन्
हे योगिवृन्दरमणा स्पदपादपद्म।
हे कुम्भजादिमुनिपूजित हे परेश
त्रायस्व नाथ भरताग्रज दीनबन्धो।।७।।
हेवायुपुत्रपरितोषित तापहारिन्
हे भक्तिलभ्य वरदायक सत्यसन्ध।
हे रामचन्द्र सनकादिमुनीन्द्रवन्द्य
त्रायस्व नाथ भरताग्रज दीनबन्धो।।८।।

श्रीमद्भरतदासेन मुनिराजेन निर्मितम्।
अष्टकं भवतामेतत् पठतां श्रेयसे सताम्।।

।। इति श्रीभरताग्रजाष्टकम् ।।

***

।। श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः।।

श्रीमति सर्वेश्वरि श्रीचारुशीलायै नमः

श्रीजानकी चालीसा

दोहाः–

जय जय जय श्रीजानकी, रसिकन रस दातार।
कृपादृष्टि मोहिं हेरिये, दर्शाइय निज प्यार।।

चौपाई

जय जय श्रीमिथिलेश किशोरी, जय रघुवर मुख चन्द्र चकोरी।
जय जय जनक नन्दिनी सीते, मृदु स्वभाव अति चरित पुनीते।।
जय जनकजा जनन हितकारी, क्षमा दया समता चित वारी।
जयति अवनिजा कृपा स्वरूपा, रसमय पावन चरित अनूपा।।
जयति मैथिली रूप उजारी, रघुनन्दन की प्राण पियारी।
जय रघुवर रस केलि विलासी, अह्लादिनी शक्ति सुखराशी।।
जय–जय राम रसिक मनहारी, जनकसुता निज जन हितकारी।
जयति अनादि शक्ति अविनाशिनि, जय रघुवर रसरंग विलासिनि।।
जय राशेश्वरि जनक दुलारी, पिय मन चित को चोरनहारी।
जय मिथिलेशलली सुकुमारी, रघुवर जीवन प्राण अधारी।।
जय जय राग प्रेम रस दानी, सरल सुशील कृपा गुण खानी।
जयति रसिक जन जीवन मूरी, कीजिय वेगि आश मम पूरी।।
मृदु हँसि पिय अंशन भुज दीने, निरखौं तुमहिं प्रेम रस भीने।
नखसिख युगल स्वरूप निहारी, मैं बहुबार जाउँ बलिहारी।।
दलि त्रणराई लोन उतारौं, आरति करि निज सर्वस वारौं।
जय–जय श्रीलाड़िली किशोरी, पिय रस रंग रँगी अति भोरी।।

जय मिथिला विप राजदुलारी, जीवन प्राण अधार हमारी।
जय रघुनन्दन प्रिय पटरानी, महिमा अमित वेद नहिं जानी।।
उमा रमा आदिक ब्रह्मानी, सबहिं मुदित तव पद रति मानी।
शचि शारदा आदि सब देवी, करहिं सदा पद पंकज सेवी।।
शरणागत प्राणहुँ ते प्यारो, अस उदार दृढ़ ब्रत तुम धारो।
कर जोरे लखि सकत न काहू, करत प्रणाम हृदय सकुचाहू।।
सोचत काह देउँ मैं याको, निज बनाय राखत ढिंग ताको।
निरखौं निशिदिन बाट तिहारी, बेगि दरश दीजिय सुकुमारी।।
शरण शरण मैं शरण पुकारी, निजकर गहि अब लेहु उबारी।
जो बिबसहुँ सिय नाम उचारत, तापर रघुबर तन मन वारत।।
होइ अनुकूल जपत सिय नामा, वाके बिबश रहत श्रीरामा।
शम्भु विरंचि विष्णु भगवाना, करत सदा तुम्हरो गुण गाना।।
तव महिमा कोउ पार न पावत, निज निज मतिसब तवयश गावत।
मातु सुनयनहिं आनन्द दानी, कीन्हें वाल चरित सुख खानी।।
लक्ष्मीनिधि की प्राण अधारी, तव छवि लखि नित रहत सुखारी।
श्री सिधि प्राणहुँ ते प्रिय सानै, सदा रूप गुण शील बखानै।।
भूरि भाग्य निमि वंशिनि केरी, कीजिय मो पर कृपा घनेरी।
चरण दरश दै अब अपनाइय, द्रुत मम आशा सुमन खिलाइय।।
मोहिं तव पद तजि और न आशा, काटिय प्रवल मोह की पाशा।
निज स्वरूप मम हृदय बसाइय, मन के सकल विकार निशाइय।।
सिय जू जीवन मूरि हमारी, दै दर्शन अब करिय सुखारी।
हौं पद कंज गहौं अकुलाई, स्वकर उठाय लेहु उर लाई।।
मृदु बचनामृत सींचि जुड़ाई, शिर पर कर फेरत हर्षाई।
बहु प्रकार निज प्यार दिखाई, दीजिय मम दृग सुफल बनाई।।

दोहा:–

उदासीन जग ते सदा, तव चरणन की आस।
सीताशरण सदा करिय, हृदय निकुञ्ज निवास।।१।।
जग व्यवहार भुलाय के, रटौं निरंतर नाम।
हिय निकुञ्ज में युगल छवि, लखत रहौं निशि याम।।२।।
युगल चरण में निशि दिवस, बास करै मन मोर।
सीताशरण यही विनय, करौं युगल कर जोर।।३।।
श्रीसिय चालीसा सतत, पढ़ै जो प्रेम विभोर।
लखै युगल मुख चन्द्र छवि, करि निजनयन चकोर।।४।।

प्रार्थना

राजेश्वरी सर्वेश्वरी, जगदीश्वरी जनकात्मजे।
रसिकेश्वरी हृदयेश्वरी, प्राणेश्वरी हे अवनिजे।।१।।
छवि सागरी नव नागरी, गुण आगरी हे भूमि जे।
मृदु हँसनिबोलनि मिलनि वारी, सदा जयति विदेह जे।।२।।

याचना

हे मम जीवन मूरि कृपामयि राज किशोरी।
मम हिय करिय निवास सदा बिनवौं कर जोरी।।१।।
तजि तव चरण सरोज अनत मन भूलि न जावै।
मधुकर इव रस पगो सतत पद पंकज ध्यावै।।२।।
तव यह युगल स्वरूप सदा निवसै हिय मेरे।
राखिय अब सर्वदा मोहि पद पंकज नेरे।।३।।
भूलि कदा जनि होय हृदय में विषय विकारा।
कीजिये ऐसी कृपा गहौं पद बारहिं बारा।।४।।

* *

।। श्री मैथिली रमणो विजयते ।।

✷ श्रीराम चालीसा ✷

दोहा:–

जय रघुनन्दन रसिक वर जीवन प्राण अधार।
कृपा दृष्टि अवलोकिये रसिया रस दातार।।

चौपाई

जय रसिकेश रसिक मन हारी। जानकि बल्लभ अवधबिहारी।।
जय-जय जीवन प्राण पियारे। कृपा सनेह सदन सुकुमारे।।
जय-जय रास रसिक वन नागर। जय जानकी रमण रस सागर।।
जय अवधेश जनेश दुलारे। रूप अनूप जगत उजियारे।।
जय सरयू तट कुञ्ज विहारी। कोटि मदन छबि पर बलिहारी।।
जय-जय कोशलेश सुत प्यारे। रसिकन मन चित चोरन हारे।।
जय मैथिली दृगन के तारे। रसमय पावन चरित तिहारे।।
जय रसिकन रस प्रेम प्रदायक। जय रस रूप सकल रसनायक।।
जय-जय शरणागत भयहारी। श्रीप्रमोद बन कुञ्ज बिहारी।।
जयति अनादि अशेष कृपाला। जानकि जीवन रूप रसाला।।
छबि गुन शील रूप सुख सागर। अमित तेज बल बुद्धि उजागर।।
जयति कृपा करुणा सुख कन्दा। हरण सकल कलिमल भ्रमफन्दा।।
जय-जय जगत जनक जग कारण। करुणानिधि भूभार उतारण।।
शिवविधि विष्णुदेव मुनिनारद। शुक सनकादिक ब्रह्मविशारद।।
नाथचरण सरोज चित धरहीं। हित सों ध्यावत उर सुख भरहीं।।
जनमन रुचिको सदा निबाहत। निज ऐश्वर्य स्वरूप भुलावत।।

निज भक्तन पर सर्वस वारत। सेवक हित मानव तन धारत।।
प्राकृत जनइव करि नरलीला। संतन सुखद मोद रसलीला।।
हे सिय रंग रंगे पिय प्यारे। जीवन धन मम दृगन सितारे।।
एकबार हँसि हृदय लगाइय। संसय मोह समूल नसाइय।।
लेत जो विबसहुँ नाम तुम्हारा। सोउ बिन श्रम उतरत भव पारा।।
प्रेम समेत जपै मनलाई। तेहिं कर विनहीं मोल बिकाई।।
वाकी योग क्षेम निज हाथा। करत न देर लगावत नाथा।।
आत्म समर्पण जो करि देवै। केवल नाथ शरण गति लेवै।।
निज सर्वस तेहिं ऊपरवारी। पीछे चलत धनुष करधारी।।
हौं अधमाधम अति अघरूपा। अधम उधारन रघुकुलभूपा।।
डूब रहेउँ भवसिन्धु मझारी। निजकर गहि अब लेहुँ उबारी।।
शरणागत प्राणहुँ ते प्यारो। तब दृढ़ ब्रत श्रुति शास्त्र पुकारो।।
सुनि अस बिरद शरण तब आयो। बिनु गथ प्रभु के हाथ बिकायो।।
अब अपनाइअ निज जनजानी। सुहृद सुशील कृपा गुनखानी।।
अति अज्ञान हृदय ममछायो। अहमिति बस निजरूप भुलायो।।
जगत अनित्य सत्य सम जानी। रमत सदा यामें सुख मानी।।
अति चंचल मन विषयनमाहीं। पगो रहत कबहूँ थिर नाहीं।।
राग दोष ईर्षा कुटिलाई। छलप्रपञ्च अतिसय दुखदाई।।
बिबिध भाँति नित मोहिं नचावें। नाथ चरण ते दूर बहावें।।
जेहि पर तब कर कंजन छाया। डरति सदा तेहि ते जड़माया।।
याते पुनि-पुनि कहौं निहोरी। अति सभीत मैं दोउ करजोरी।।
चरण शरण में अब रख लीजै। हिय में आप बसेरो कीजै।।
स्वयं प्रकाश होइ उरमाहीं। मिटै अविद्या संसय नाहीं।।
सीता शरण नाथ की आशा। सकल जगत से रहौं निराशा।।

दोहा:-

युगल चरण पंकजन में मधुकर इव मन मोर।
सीताशरण बसै सदा विनय अहै चित चोर।।
सावधान एकान्त में मन करि परम सचेत।
पाठ करै अति शुचि हृदय सादर प्रेम समेत।।
सो रघुनन्दन की कृपा पावै अविचल धाम।
सीताशरण सदा हृदय विहरैं सीताराम।।

✷

छं. सो.:-

जय रसिकेश उदार प्राण जीवन धन प्यारे।
जय छबि निधि सुख सिन्धु रूप गुनशील उजारे।।
जय जय करुणा खानि मृदुलचित कृपा अगारा।
निज जन मन अभिराम जयति रघुबंश कुमारा।।
निर्हेतुकी दयालु प्रणत जन आँनन्द कारी।
भक्त बछल सुख धाम राम श्रीअवध बिहारी।।
निज पद कँज दिखाय हरिय अति बिपति हमारी।
सीता शरण बिलोक चरण होइहौं बलिहारी।।

।। श्री राम चालीसा सम्पूर्ण ।।

।। जय श्रीराम।।

✷

।। श्री मैथिली रमणो विजयते ।।

श्रीमत्यै सर्वेश्वरि श्रीचारुशीलायै नमः

श्री किशोरी विनय

हे मम जीवन भूरि किशोरी अखिल जगत सुखकारी।
वात्सल्य रसखानि जानकी निमिकुल की उजियारी।।
हे मिथलेश नन्दिनी स्वामिनि अवनि सुता सुकुमारी।
अब करि कृपा विलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।१।।
हे करुणामयि परम कृपामयि आश्रित जन हितकारी।
हे रघुबर मन मोद प्रदायिनि जय श्रीराजदुलारी।।
हौं सब भाँति अयान मान मद मात्यो तुमहिं बिसारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।२।।
हे मम मानस भजु मरालिनि माया मोह निवारी।
करिये निज पद कंज मधुप मोहिं अति असहाय बिचारी।।
किंचित कृपा कटाक्ष रावरी होत द्रवत धनुधारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।३।।
हे मम प्राण संजीवनि मूरी पिय अंशन भुज धारी।
दीजिय दर्शन परम दयामयि केवल आश तिहारी।।
सुयश उदार अपार आपको कहें श्रुति सन्त पुकारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।४।।
हे शरणागत शोक विमोचनि सब बिधि करत सुखारी।
प्रतिपालति लालति निशिवासर प्रिय शिशु सरिस बिचारी।।
हे आश्रित जन दोष नसावनि पिय की परम पियारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।५।।

हे सुठि सुभग सलोनी मूरति सूरति की बलिहारी।
हे मम सर्वस जीवन जी की निरखौं कृपा तिहारी।।
हे अवधेश किशोर ललन की जीवन की प्राण अधारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।६।।
जयति जनक नन्दिनी जानकी सब जग सिरजन हारी।
निरखत कृपा कटाक्ष रावरी विधि हरिहर पविधारी।।
कोटिन उमा रमा रति शारद पूजत चरण सुखारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।७।।
मृत्युकाल पवन जम धन पति अपर सकल सुरझारी।
वन्दत चरण सरोज तिहारे पावत मोद अपारी।।
वरणत बिबुध बधू बिधु बदनी तव गुण शील सुखारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।८।।
हे चित चोर चतुर चूड़ामणि पिय हिय आनन्दकारी।
मनचित हरनि करनि कल क्रीड़ा रूप अनूप उजारी।।
यद्यपि परम स्वतन्त्र रसिक मणि तब बश भय धनुधारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।९।।
हे मिथिलाधिप राज दुलारी पिय हिय हरि वशकारी।
होत प्रसन्न प्रणाम मात्र से दोष न नयन निहारी।।
देखि न सकत दीन कर जोरे भोर सुभाव सुखारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।१०।।
हिमहुँ लगे जो सी सी सिसकत आपन नाम बिचारी।
देत परम रस रूप धाम नित अचल अमल अविकारी।।
जहँ नहिं उड़गन अग्नि चन्द्र अरु जहाँ न उदित तमारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।११।।

हे वात्सल्य शील गुन सागरि नागरि जन हितकारी।
कोमल चित्त उदार सुयश जग विदित सन्त श्रुति चारी।।
हे कारुण्य पूर्ण प्रिय लोचनि मोचनि दोष दबारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।१२।।
जयति सरलता सीवँ स्वामिनी सिय सब सुख दातारी।
अभयद सबहिं कृपा की मूरति अबध छयल मन हारी।।
जय-जय रसिक जनन रस दानी प्रियतम हिय मुदकारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।१३।।
हे रघुकुल कुल कमल विभाकर रघुनन्दन वश कारी।
पिय हिय कंज विकाशक संतत सब विधि सिय सुकुमारी।।
जय रबि वंश हंस सम पावन सुख रस वर्धन हारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।१४।।
जयति मधुर मंजुल मन मोहन रघुनन्दन मन हारी।
जय सिय स्वामिनि सुलभ सलोनी निमिकुल की उजियारी।।
जय रघुबर मुख चन्द्र चकोरी गोरी अवनि कुमारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।१५।।
कोटि कोटि कन्दर्प दर्प हर नृप सुत श्री धनुधारी।
लखि ललचत ललकत जाकी छवि तनमन सुरति बिसारी।।
चाहत मृदु हँसि वंक विलोकनि संतत अवध बिहारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।१६।।
जो माया निज वश करि राखे सब सुर नर मुनि झारी।
रही नचावति जो सब जगको निज प्रभाव विस्तारी।।
सोउ सिय कृपा कटाक्ष निहारत हिय मानत भयहारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।१७।।

जाकी सत्ता पाय सत्य इव माया जगत निहारी।
माया पति अनवद्य अगोचर जो संतत अविकारी।।
अगुन अखण्ड अनन्त कहावत सोउ तुम पर बलिहारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।१८।।
हे श्री विपिन प्रमोद विहारिनि संतत सखि सुख कारी।
प्रीतम संग रंग रस राँची नवल विमल रुचिकारी।
काम कलोल केलि कल कुशला काम नशावनि हारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।१९।।
परिकर प्रेम प्रमोद प्रदायनि प्रीतम प्राण पियारी।
पूरित प्रेम पियूष प्रपूरक प्रेम निवाहन हारी।।
परिकर पद पूजिता परम प्रिय पिय को रस दातारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।२०।।
जयति अनादि शक्ति अविनासिनि सुख रासिनि मुदकारी।
अह्लादिनि परमेश राम हिय रस वर्षावन हारी।।
जयति अवनि सम क्षमा मूर्ति वर मंजुल रूप उजारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।२१।।
हे सीते शत कोटि चन्द्र छवि स्वमुख विनिन्दनि हारी।
वात्सल्य रस खानि कृपामयि शरणागत हितकारी।।
अवगुण दृष्टि न आवत जन के दुलरावत चुचकारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।२२।।
हे मैथिली मधुर मूरति वर बचन रचन रुचिकारी।
जीवनधन अवधेश सुबन की सर्वस मन चितहारी।।
बोलनि मिलनि चलनि हँसि हेरनि सरस नयन कजरारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।२३।।

संतत सखियन संग रंग रंगि रास रचावन हारी।
करि क्रीड़ा कमनीय कलोलति केलि कला विस्तारी।।
अतिसय कोमल चित्त सौम्य दृग दीन जनन हितकारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।२४।।
हे आरत जन सोच विमोचनि विपति विकार विदारी।
पकरावति कर राम कुमार को विषम वियोग निवारी।।
सतश्रुति पंथ दिखति सबको सकल दोष दुखहारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।२५।।
हे सीते सुख खानि शोक हर प्रेम विवर्धनहारी।
परतर परम परेश प्रभु की प्राणपिया सुखकारी।।
हे मम जीवन मूरि जानकी चरणन पर बलिहारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।२६।।
हे जनकजा जनन हितकारी तन द्युति ज्योति उजारी।
मानमोह मद मदन मिटावन करुणा किरण पसारी।।
प्रीतम प्रीति प्रतीति प्रकाशिनि पिय की प्राण पियारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।२७।।
हे मिथिलेश किशोरी स्वामिनि मैं नित बाट तिहारी।
निरखत रहौं सतत निशिबासर निज पद दरश सुखारी।।
दीजिय परम दयामयि मोकहँ कर गहि लेहु सँवारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।२८।।
हौं अकुलाय गहौं पद पंकज निज तन सुरति बिसारी।
कर धरि शीश उठाय स्वकर तुम पावहु मोद अपारी।।
सादर शीश सूँघि उरलाई मेटहुँ विपति हमारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।२९।।

तजि रावर पद कंज लाड़िली मैं पायो दुख भारी।
भरमत रह्यो अनेक योनि में ध्याये सब सुरझारी।।
पर मम विपति हरी नहिं काहू कदा न भयो सुखारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।३०।।
हे प्रीतम पद प्रीति प्रदायिनि सिय स्वामिनि सुकुमारी।
हे अवधेश ललन मन रंजनि जीवन मूरि हमारी।।
हे रसिकेश हृदय रस बर्धनि पराशक्ति सुखकारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।३१।।
हे मैथिली मंजु मृदु मूरति पिय की प्राण अधारी।
हे सीते स्वामिनी कृपामयि रूप शील उजियारी।।
हे जीवन धन जीवन जी की जनक लली पिय प्यारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।३२।।
हे मम जीवन जरी जानकी पद रज मम शिर धारी।
कीजिय मोहिं कृतार्थ कृपामयि अति कोमल चितवारी।।
तजि तुम्हरे पद कंज लाडिली नहिं गति अपर हमारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।३३।।
हे मिथिलाधिप लली भली विधि मेरी ओर निहारी।
काम क्रोध कुटिलता दोष दलि मद मोहादि निवारी।।
दिखलाय पद पद्म आपने हौं निशि दिन बलिहारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।३४।।
जयति जनक नन्दिनी कृपा निधि रति रस बर्धनिहारी।
तुम्हरे बस रहत निरन्तर रसिकेश्वर मन हारी।।
जापर किंचित कृपा रावरी तापर पिय बलिहारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।३५।।

मातु सुनयना अंक मोद प्रद सिद्धि कुँवरि सुखकारी।
श्रीलक्ष्मीनिधि जीवन जी की निमिकुल की उजियारी।।
करिकमनीय केलि सखियन हिय हर्ष बढ़ावनहारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।३६।।
सिय स्वामिनि गुनग्राम काल बहु कहि कहि शारदहारी।
शेश महेश गनेश देव ऋषि कोउ नहिं पावतपारी।।
लखि जाकी माधुरी बिना गथ बिक गये अवध बिहारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।३७।।
सीता कुण्ड सुथल अशोक वन बिलसत अवध मझारी।
तहँपर सीता कुंज सोहावन जहँ विहरत पिय प्यारी।।
रसिकन रस दातार प्रगट भई यह विनती सुखकारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।३८।।
संवत दो हजार सत्ताइस रवि वासर मुदकारी।
अगहन कृष्णपक्ष नवमी तिथि सिय गुण ग्राम सुखारी।।
गाये सीताशरण मधुरतर गुरुपद रज शिरधारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।३९।।
जय-जय कृपारूपिणी स्वामिनि आश्रित जन हितकारी।
अशरण शरण उदार विरद जग विदित विमल श्रुतिचारी।।
जय-जय सीता शरण चरण पर हौं निशिदिन बलिहारी।
अब करि कृपा बिलोकिय मम दिशि हे श्रीजनकदुलारी।।४०।।

दोहा:-

हे मम प्राण सजीवनी रघुनन्दन हियहार।
सन्तत सीता शरण तव चरणन पर बलिहार।।

।। श्रीमैथिली रमणो विजयते ।।

श्रीरघुनन्दन विनय षोडसी

हे मम जीवन प्राण रसिक चूडा मणि रधुवर।
जयति सच्चिदानन्द कन्द दुख द्वन्द दोषहर ।।१।।
हे उदार सुकुमार श्याम सुन्दर सुजान तर ।
जय सुषमा आगार प्यार वर्धक सनेह घर ।।२।।
हे निज जन मन रमन सरस राजीव विलोचन।
जय करुणा गुणधाम राम भक्तन भय मोचन ।।३।।
हे सुख धाम परेश भाव ग्राहक हृदयेश्वर।
पागे प्रेम पियूश प्रेम पूरक प्राणेश्वर।।४।।
करिये ऐसी कृपा सतत हे अवध बिहारी।
तब पद कंज मरन्द मधुप मति रहे हमारी ।।५।।
तजि एकौ पल भूलि अनत नहिं जाय कृपाला ।
तब मुख चन्द्र पियूष पान कर परम रसाला ।।६।।
सब जग जाय हिराय स्वतन की सुरति भुलावै।
तब मूरति कमनीय सतत हिय में उमगावै ।।७।।
लोक बड़ा ईमान जगत ऐश्वर्य न चाहौं ।
सन्तत सीतासरण चरण में नेह निबाहौं ।।८।।
जय अबधेश कुमार कोटि शत मार मान हर ।
नाशक कमविकार काम पूरक प्रमोद कर ।।९।।
यद्यपि बहु अवतार बरद बहु सुर समुदाई ।
पर मोहिं सुखद न एक सत्य वच हे रघुराई ।।१०।।

जवतक जीवन ज्योति जपौ श्री सीतारामा।
गावौं पगि अनुराग सतत दोउ के गुण ग्रमा।।११।।
निबसौं मिथिला अबध अपर थलमन नहिं जावै।
तुम्हरे प्रेमिनि संग रंग रंगि हिय उमगावै।।१२।।
कर्म विवश यह देह रहे जग में केहु ठामा।
मनमतिकरैनिबास अमल अविचलतबधामा।।१३।।
तब पद पंकज प्रेम धार कबहूँ नहिं टूटै।
लगी रहे अविछिन्न तैल इव सब जग छूटै।।१४।।
यही एक बार विनय करिय पूरण हे स्वामी ।
सर्वरूप सब रहित कृपा निधि अन्तरयामी।।१५।।
हम दोउ को सम्बन्ध अचल निबहै सब काला ।
करिये सीताशरण कृपा इमि रूप रसाला।।१६।।

दोहा :-

हम नित तबपद पूजही भरि हिय मे अति प्यार।
तुम मम मुख निरखत रहौ बार बार बलिहार।।

प्रार्थना

सिया स्वामिनी

तब पद पदुम विहाय ना भरोस मोहिं,
जोहि जिय लीजै सुधि मेरी सिय स्वामिनी।
यद्यपि हौं अधम मलीन अघ खानि,
तदपि कहाऊँ चेरि तेरी सिय स्वामिनी।
प्रभुहुँते सरस क्षमादि शुभ गुण सिन्धु,
कीरति बदत श्रुति तेरी सिय स्वामिनी।
ताहि बल शोच छाडि नाम लै उदर भरौं,
निदरि गुणादि कृत केरि सिय स्वामिनी।
करत अधिक छोहि तापै आप प्राणनाथ,
जापै रंच तोरि दग हेरि सिय स्वामिनी।
तातै बार -बार कर जोरि माँगौं दीन होय,
राखु निज चरणन नेरि सिय स्वामिनी।
द्रवत न कौशल कुमार तव नेह विने
करे क्यों न कर्मयोग ढेरी सिय स्वामिनी ।
जैहों नाहिं द्वार ते निकारे हूँ पै दया निधे,
साँची गुन कहति हौं टेरी सिय स्वामिनी।
जौन माया योगी सिद्ध ज्ञानी विधि शम्भू हूँ तौ,
निज बस माँहि किये जेरी सिय स्वामिनी।
सोउ तब भृकुटि विलोकति रहति सदा,
चाहति कटाक्ष कृपा केरी सिय स्वामिनी।
जनक कुमारी रघुवंश मणि प्राणप्यारी,

अब जनि कीजै नेकु देरी सिय स्वामिनी।
रूपकला प्रीतम से दीजिये धराय कर,
बिगरी बनैगी तब मेरी सिय स्वामिनी।।

सद्गुरुदेव

(बाबा रामभारती कृत)

सत गुरु मेरे सूरमा धर के मारा तीर ।
बाहर घाव दीखै नही भीतर बिंध्या शरीर ।।
सत गुरु मेरा बानिया करै बणिज व्यवहार ।
बिना तराजू बाट के तोले जग संसार ।।
पहले किसको ध्याऊँ मैं किसको दूँ सम्मान ।
प्रथम मात दूजे पिता तीजे गुरु महान्।।
अलख पुरुष निज नाम चतुर्थ लखै कोई बिरला पीर।
भेद बतावे उस घर का मन में धर के धीर ।।
भेदी होतो कुछ भी नही बड़ी नहीं कोई बात ।
वारी जाऊँ गरुचरण जो कहें तत्व रहस्य की बात ।।
तत्त्व ज्ञान का जानन हारा सार शब्द भी जानें ।
ऐसा सूरमा मिले गरु तो राम भारती माने ।।
मुकुट बनाकर रखूँ शीशपर सत्यसपथ भगवान की।
ऐसा गुरु पूरा मिले तो बाजी लगादूँ जान की ।।
राम भारती बिनती करे मुझको शरण में लीजिये ।
खा रहा गोते हूँ मैं बेड़ा पार भव से कीजिये ।।

श्रीसीता जी की आरती

आरती जनक दुलारी की सीता रघुवर प्यारी की।
जगत जननि जग की विस्तारिणि ,
नित्य सत्य साकेत विहारिणि,
परम दयामयि दीन उद्धारिणि,
मैया भक्तन हितकारी की।।आरती।।
सती शिरोमणि पतिहित कारिणि,
पतिसेवा हित वन वन चारिणि,
पति हित वियोग स्वीकारिणि,
त्याग धर्म मूरति धारी की।।आरती।।
विमल कीर्ति सब लोकन छाई,
नाम लेत पावन मति आई,
सुमिरत करत कष्ट दुखदाई,
शरणागत जन भय हारी की ।।आरति।।

।। इति।।

समर्पणः

है कल्प अनन्त कोटि मम नयन मातु तेरे चरणो में।
यह वस्तु आपकी है माता अर्पण करदी आपके चरणों में।।

मम दास धीरेन्द्र की तुच्छ भेंट माँ जगदम्बे स्वीकार करो।
जो त्रुटियाँ हों इस सेवक की माँ उनका स्वयं सुधार करो।।
तुच्छ भेंट अर्पण करूँ तब तेरे चरणों मे मात्
धीरेन्द्र तेरे दास का शत् शत् कोटि प्रणाम्।।
माते! जगदम्बिकायाः चरणकमलयोः
इदं "श्रीजानकीस्तवराजः" संग्रहीतस्य सादरं समर्पणमस्ति।।

।। इति ।।